विचार बिन्दु

आत्मा के आनंद रूपी सामंजस्य का बाहरी रूप दया है। - विलियम हैज़लित

क्या हम महाकुंभ के हादसे से सबक लेंगे?

मंगलवार और बुधवार के मध्य की रात्रि में लगभग एक और दो बजे के बीच प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ में मौनी अमावस्या के अवसर पर मची भगदड़ में 30 लोगों की मृत्यु हुई और लगभग 60 घायल हुए। आश्चर्य की बात है कि इस हादसे के लगभग 18 घंटे बाद तक सरकार एवं प्रशासन द्वारा हादसे में मृत व्यक्तियों के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इस बार के कुंभ को विश्व का सर्वाधिक विशाल आयोजन बताया गया जिसमें कुल 45 करोड़ श्रद्धालुओं के सम्मिलित होने का अनुमान था।

कई दिनों से निरंतर विभिन्न संचार माध्यमों से राज्य सरकार द्वारा कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए श्रेष्ठतम व्यवस्था किए जाने के दावे किए जा रहे थे। राज्य सरकार द्वारा बताया गया कि महाकुंभ के आयोजन पर लगभग 7500 करोड़ रुपए व्यय किए गए। राज्य सरकार के दावों के अनुसार इस आयोजन के परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश में लगभग 2 लाख करोड रुपए का व्यवसाय होने की अपेक्षा थी। यह बताया जा रहा था कितनी बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स को तैनात किया गया है आधुनिकतम तकनीक का उपयोग किया गया है और कैसे विश्व के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ इस आयोजन की प्रबंधन की क्षमता को देखने के लिए महाकुंभ में आ रहे थे। इस आयोजन को सरकार मने अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ लिया था, विशेष कर आदित्यनाथ योगी की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से।

महाकुंभ के दौरान कुछ विशेष स्नान आयोजित किए जाते हैं इनमें सबसे प्रमुख मौनी अमावस्या के अवसर पर होने वाला स्नान है। कहा जाता है कि मौनी अमावस्या के प्रारंभ में ब्रह्म मुहूर्त में संगम पर डुबकी लगाने से विशेष रूप से अमृत लाभ प्राप्त होता है। इस अवसर पर 10 करोड़ यात्रियों के आने की संभावना थी।

हर बार की तरह इस बार भी महाकुंभ के दौरान देश और विदेश की कई प्रख्यात हस्तियां आईं। इसके अतिरिक्त कई प्रभावशाली व्यक्ति भी इस दौरान अपने लाव लश्कर के साथ संगम पर स्नान के लिए आते हैं। उनके लिए विशेष प्रकार की व्यवस्था प्रशासन द्वारा की जाती है ताकि उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो। वी वी आई पी का विशेष ध्यान रखना और उनके लिए की जाने वाली विशेष व्यवस्थाओं के कारण ही संगम तक जाने के कई मार्ग बंद कर दिए गए। साथ ही आने और जाने का मार्ग भी एक ही रखा गया।

सरकार द्वारा जिस प्रकार महाकुंभ का प्रचार प्रसार किया गया और लोगों को अधिक सेअधिक संख्या में आने के लिए एक प्रकार से आमंत्रित किया गया उसके कारण अनुमान से कहीं अधिक भीड़ वहां पहुंची। भीड़ का दबाव बढ़ने के कारण अचानक 28 जनवरी की देर रात्रि एक और दो बजे की बीच भगदड़ मच गई, जिसमें कई पुरुष, महिलाएं और बच्चे कुचलकर, दबकर मर गए और कई घायल हो गए। इसकी जानकारी कई घंटे तक देश को नहीं दी गई और राष्ट्र के प्रमुख मीडिया चैनल केवल मौनी अमावस्या पर होने वाले स्नान की भव्यता और दिव्यता की ही खबरें प्रसारित करते रहे। कितने लोग घायल हुए या मरे, इसकी कोई जानकारी लंबे समय तक नहीं दी गई। कुछ पुलिस अधिकारियों ने तो भगदड़ की घटना से ही इनकार किया और इसे छोटी मोटी घटना बताया। यहां तक कि उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री संजय निषाद ने भी इसे छोटी घटना बताया।

सभी राष्ट्रीय टी वी चैनलों पर केवल यह प्रसारित किया गया कि अफवाहों पर ध्यान न दें। यह भी बताया जा रहा था कि प्रधानमंत्री ने चार बार मुख्यमंत्री योगी से बात की है। जब सोशल मीडिया पर खबरें बहुत अधिक फैलने लगीं तो फिर हादसे के 18 घंटे बाद मुख्यमंत्री योगी टीवी पर अवतरित हुए और बताया कि 30 व्यक्तियों की मृत्यु हुई है एवं 60 घायल हुए हैं। जिस प्रकार सरकार ने 18 घंटे तक आंकड़ों को छुपाए रखा उससे अब जो बताए गए आंकडे हैं उस पर भी विश्वास करना सरल नहीं है।

बाद में यह भी पता चला कि भगदड़ एक नहीं दो जगह पर हुई थी। झूसी में युति क्षेत्र में हुई भगदड़ के हृदय विदारक दृश्य मीडिया में आने लगे। साथ ही प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि यहां भी कई लोगों की मौत हुई है। लगभग 1500 व्यक्ति अपने खोए हुए परिजनों की तलाश में इधर उधर भटक रहे हैं। मरने वालों की कुल संख्या का पता तो बाद में ही लगेगा।

कुंभ हजारों सालों से होता आया है और उसमें लाखों श्रद्धालु चारों कुंभ यथा नासिक, हरिद्वार, उज्जैन और इलाहाबाद के संगम पर स्नान करते आए हैं।

जब से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बने हैं तब से कुंभ के आयोजन को भी इवेंट का रूप दे दिया गया है। इसका अत्यधिक प्रचार प्रसार मीडिया के माध्यम से किया जाता है और यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है कि विश्व में प्रबंधन का यह सर्वोत्तम उदाहरण है। इस बार के प्रयागराज के महाकुंभ के बारे में तो यह भी प्रचारित किया गया कि इस बार का महाकुंभ, पूर्ण महाकुंभ है जो 144 वर्षों में एक बार होता है। सरकार के अत्यधिक प्रचार प्रसार ने बहुत बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के मन में प्रयागराज कुंभ में जाने की इच्छा उत्पन्न कर दी। स्वयं उत्तर प्रदेश सरकार ने यह अनुमान कई महीनों पहले से लगा लिया था कि लगभग 40- 45 करोड़ श्रद्धालु कुंभ में आएंगे. यह भी कहा गया कि मौनी अमावस्या के दिन 10 करोड़ के लगभग श्रद्धालु संगम पर डुबकी लगाएंगे।

किसी ने भी यह ज्ञात करने का प्रयास नहीं किया कि प्रयागराज में और विशेष कर संगम पर क्या इतने अधिक व्यक्तियों के लिए सुरक्षित स्नान करना संभव भी है या नहीं? सरकार का ध्यान केवल गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने पर रहा या वी वी आई पी की देखभाल करने पर।

हम तो नागरिक के रूप में आशा ही कर सकते हैं कि सरकार इस हादसे को गंभीरता से लेते हुए न केवल जांच आयोग की रिपोर्ट को शीघ्र सार्वजनिक करे अपितु दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करे और वी आई पी संस्कृति को बंद करे। सरकार ने लाल बत्ती तो बंद की किंतु अब भी हूटर बेधड़क जारी है। इन पर भी पूरी रोक लगनी चाहिए।

सरकार स्वयं की प्रशंसा के पुल लगातार बांधती रही और मुख्यमंत्री जी महाकुंभ की व्यवस्थाओं को उत्कृष्ट श्रेणी का बताते रहे। किंतु ऐसा करते समय भीड़ नियंत्रण के सामान्य सिद्धांतों को भी ताक पर रख दिया गया। वी वी आई पी को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए संगम तक पहुंचने के कई रास्ते बंद कर दिए गए। इस कारण प्रयागराज में धार्मिक आस्था से आने वाले आम श्रद्धालुओं को परेशानी का सामना करना पड़ा। ऐसा नहीं है कि इस हादसे की आशंका प्रशासन को नहीं थी। एक वीडियो निरंतर प्रसारित हो रहा है जिसमें एक वरिष्ठ अधिकारी बार-बार लाउडस्पीकर पर घोषणा करते हुए दिखाई दे रहे थे कि श्रद्धालु स्नान के बाद वहां सोएं नहीं क्योंकि भगदड मचने की संभावना है। ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करने की इच्छा इतनी बलवती थी कि सब वहीं पर सो गए गए, ताकि सबसे पहले स्नान कर सकें। इसी दौरान रात्रि के 1 बजे के आसपास पुलिस बैरीकेड को भीड़ के दबाव ने तोड़ दिया और बाद में लोग भीड़ के नीचे दबकर मरते गए। सब लोग सरकार के दावों पर विश्वास करके महाकुंभ में आए किंतु उनमें से कई अपने परिजनों की लाश को ही ले जा पाए। बाबा बागेश्वर उर्फ धीरेन्द्र शास्त्री ने तो यह कह कर घाव पर नमक छिडकने का कार्य किया कि प्रयागराज में भगदड़ में मरने वालों को मोक्ष प्राप्त होगा।

कुंभ में संगम में स्नान करना धार्मिक आस्था का प्रश्न है और हजारों वर्षों से, इसमें लोग बिना किसी आमंत्रण के चलकर आते रहे हैं। इस बार सरकार ने इसे इवेंट बना कर इसका खूब प्रचार प्रसार किया जिसके कारण कई वे लोग भी आए जो सामान्यतः शायद यहां नहीं आते।

मुख्यमंत्री योगी जी ने मृतकों के परिवारों को 25-25 लाख की सहायता एवं एक न्यायिक जांच की भी घोषणा की है। ऐसे अनेक हादसे पहले भी हुए हैं और उनके लिए न्यायिक जांच आयोग भी बैठे हैं। हर बार वही कहानी दोहराई जाती है और पहले के हादसों से कोई कोई सबक नहीं लिया जाता।

राजस्थान में ही जोधपुर के मेहरानगढ़ किले स्थित मंदिर में लगभग 300 लोगों ने भगदड़ में अपनी जान गंवाई थी। उस जांच आयोग की रिपोर्ट आज तक सार्वजनिक नहीं की गई। अन्य जांच आयोगों की भी यही स्थिति है। लगता है, सरकार ने किसी भी हादसे या दुर्घटना से कोई सबक नहीं लेने की कसम खा रखी है। क्यों नहीं जांच आयोग की रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाता ताकि जनता यह देख सके कि उसमें दिए गए सुझावों की कितनी पालना सरकार के द्वारा की गई है और कितने दोषियों को सजा मिली?

सरकार द्वारा बार-बार विज्ञापन किया गया कि उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में दो लाख करोड़ रुपए का योगदान इस महाकुंभ का होगा। शायद, सरकार के लिए कुछ व्यक्तियों की जान की कोई कीमत नहीं होती। अयोध्या में भी गत दो तीन वर्ष से सरयू के तट पर 25-30 लाख दिए जलाने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया जा रहा है। कोई यह नहीं पूछता कि आम नागरिक के टैक्स से की गई कमाई का पैसा केवल लाखों दिए जलाने पर क्यों खर्च किया जाता है? क्यों नहीं देश वासी अपनी आस्था के अनुसार अपने घरों पर दिए जलाएं और सरकार इस काम से अपने आप को अलग ही रखे? जहां अत्यधिक भीड़ होती है वहां वीआईपी के आने के कारण भगदड़ की संभावना अधिक हो जाती है। क्या यह निर्णय सभी राजनीतीज्ञ मिलकर नहीं ले सकते कि अत्यधिक भीड़ वाले आयोजन में वे नहीं जाएंगे ताकि प्रशासन अपना काम भली भांति कर सके?

संबंधित उच्च अधिकारी जिनके पास मेले को आयोजित करने की जिम्मेदारी थी और जो लगातार हादसे के बाद भी इससे इनकार करते रहे, उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही की जानी चाहिए। यह भी कहा जा रहा है कि भगदड़ एक से अधिक स्थानों पर मची थी और वहां भी जनहानि हुई है। सरकार द्वारा इससे अब तक इनकार किया जा रहा है किंतु सोशल मीडिया पर उपलब्ध वीडियो सरकार के इस दावे को झुठला रहे हैं।

इस बार भी यही कहा जाएगा कि दोषियों को बक्शा नहीं जाएगा और आवश्यक सुधार किए जाएंगे। अब तक का अनुभव तो यही बताता है कि सरकार ऐसे हादसों से कुछ सीख नहीं लेती। अब यह जनता को तय करना है कि सरकार को सबक कैसे सिखाएं? जो सरकार स्वयं सबक सीखने से इंकार करे, उसे सबक सिखाने की जिम्मेदारी अंतत देश की जनता की ही तो होती है।

राज्य सरकार द्वारा नियुक्त न्यायिक आयोग की रिपोर्ट कब आएगी और उस पर सरकार कोई कार्रवाई करेगी भी या नहीं, यह तो भविष्य बताएगा।

हम तो नागरिक के रूप में आशा ही कर सकते हैं कि सरकार इस हादसे को गंभीरता से लेते हुए न केवल जांच आयोग की रिपोर्ट को शीघ्र सार्वजनिक करे अपितु दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करे और वी आई पी संस्कृति को बंद करे। सरकार ने लाल बत्ती तो बंद की किंतु अब भी हूटर बेधड़क जारी है। इन पर भी पूरी रोक लगनी चाहिए।

किंतु प्रथम दृष्टया कुछ प्रमुख गलतियां स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

पहली, राज्य सरकार ने एक धार्मिक आस्था के उत्सव को मार्केटिंग इवेंट में बदल करके इस व्यवसाय का रूप दे दिया। अपने प्रचार तंत्र का भरपूर उपयोग करके कुछ ऐसा वातावरण निर्मित कर दिया कि यदि इस बार महाकुंभ के दौरान संगम में डुबकी नहीं लगाई तो पाप नहीं धुलेंगे।

दूसरी, वी वी आई पी के आवागमन के कारण प्रशासन पर अत्यधिक दबाव जिस कारण वह आम व्यक्ति पर अधिक ध्यान नहीं दे पाया।

तीसरी, प्रयागराज के संगम की श्रद्धालुओं के दबाव झेलने की क्षमता का आकलन प्रशासन सही तरह नहीं कर पाया।

चौथी, संगम पर आने जाने का अलग मार्ग सुनिश्चित नहीं किया।

पांचवीं, प्रशासन ने हादसे के बारे में सही जानकारी जनता को देने में पारदर्शिता नहीं बरती।

आशा की जाती है कि इस हादसे से सीख लेकर सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

बांग्लादेश दूसरी बार क्रेस: भारत को सबक

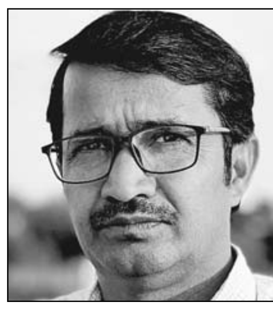

रामगोपाल जाट

भारत के पड़ोसी बांग्लादेश की सरकार को पांच महीनों में ही दूसरी बार सत्ताहीन करने का प्रयास शुरू हो गया है। कथित छात्र आंदोलन के बाद अगस्त में ही बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने सत्ता खोकर भारत में शरण ली थी। तब से वहां पर कार्यवाहक प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस अंतरिम सरकार चला रहे हैं। एक बार भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था, आप दोस्त बदल सकते हो, लेकिन पड़ोसी नहीं। इसलिए पड़ोसी के साथ संबंध सुधारने के प्रयास करते रहना चाहिए। वर्तमान पीएम नरेंद्र मोदी ने भी उसी नीति को आगे बढ़ाया, लेकिन इसके साथ मोदी ने विदेशी कूटनीति को धार भी दी।

आप याद कीजिए 2014 के बाद पीएम मोदी की विदेश यात्राएं, कैसे धड़ाधड़ विदेश नीति को बदला गया। कभी भारत गुट निरपेक्ष देशों का लीडर था, लेकिन अब मोदी सरकार खुलेआम कहती है कि भारत निर्गुट नहीं है, भारत शांति के गुट में है। यह तो भारत की स्पष्ट नीति है, लेकिन असल में तो मोदी सरकार की नीति भारत के हित की है। युद्ध भले रूस और यूक्रेन के बीच हुआ हो, या इजरायल एवं फिलिस्तीन के बीच हुआ हो, लेकिन भारत ने हमेशा अपने हित को प्राथमिकता दी। भारत से पहले ऐसा वो सभी देश कर रहे हैं, जो विकसित हैं या विकसित होने की कगार पर खड़े हैं। इसके बीच ऐसा भी नहीं है कि भारत ने पड़ोसी का धर्म नहीं निभाया हो, भारत ने मानवता के लिए श्रीलंका से लेकर अफगानिस्तान और खुद बांग्लादेश से लेकर म्यांमार तक को मानवता के नाते खूब मदद की है। संकट के समय जब श्रीलंका को चीन ने अकेला छोड़ दिया था, तब भारत ने ही चावल से लेकर ईंधन तक दिया।

बांग्लादेश में कथित तौर पर जब छात्र आंदोलन हुआ, हालात बदतर हुए तो भारत ने ही शेख हसीना को शरण देकर उनकी जान बचाई। यूं तो वैश्विक नीति का अंदाज़ा लगाना कठिन है कि कौन देश कब, किसके ऊपर उपकार कर रहा है और किसे डीप स्टेट के तौर पर उपयोग में ले रहा है, लेकिन भारत ने हमेशा मानवता को सबसे ऊपर रखा है। यूरोपीय देश जब डीप स्टेट थ्योरी का दबाव झेल रहे हैं, तब भारत ने कई पड़ोसी देशों को मानवता के नाते निःस्वार्थ भाव से मदद की है। जितनी धार्मिक, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक भिन्नता भारत में है, उतनी शायद ही किसी दूसरे देश में होगी, लेकिन फिर भी भारत विकास कर रहा है, लगातार अपने लोकतंत्र को मजबूत करने में कामयाब हो रहा है, तो इसका सबसे बड़ा कारण यहां के लोगों की सहनशीलता है। पिछले कुछ वर्षों से भारत में असहिष्णुता नाम का नया शब्द प्रचलित करने का खूब प्रयास हुआ है। इनटोलरेंट जैसा शब्द भारत की संस्कृति में कहीं पर फिट नहीं बैठता।

यहां की सभ्यता, संस्कृति, धार्मिक भिन्नता भी भारत को असहिष्णु नहीं बना पाती है। करीब डेढ़ सो करोड़ की आबादी के बाद भी लोकतंत्र के लिए भारत जिस मजबूती का उदाहरण बन रहा है, कई देशों के लिए सीखने का विषय है। सत्ता प्राप्त करने की लालसा में कुछ नेताओं द्वारा भाषणों की गिरावट को छोड़ दिया जाए तो भारत की राजनीति में भी बहुत सहिष्णुता दिखाई देती है।

54 साल पहले भारत के द्वारा ही आजाद करवाया गया बांग्लादेश आज बर्बादी के मुहाने पर खड़ा है। मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली सरकार एक बार फिर से छात्रों और रेलकर्मियों के निशाने पर है। बांग्लादेश में सभी जगह ट्रेनों का संचालन बंद कर दिया गया है। देश में 350 ट्रेन चलती है, इनमें से 100 इंटरसिटी ट्रेनों का संचालन होता है। इनके अलावा 35 मालगाड़ियां भी संचालित होती हैं। छात्रों ने एक बार फिर से ढाका में आंदोलन कर दिया है। पिछले साल अगस्त में ही बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार को अपदस्थ कर मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार बनी थी। अब यूनुस की सरकार से भी लोग खुश नहीं हैं।

अपनी विभिन्न मांगों को लेकर रेलवे कर्मचारियों ने देश में रेल यातायात को बंद कर दिया है। ढाका विवि के छात्रों ने अलग से स्वतंत्र विवि की स्थापना को लेकर आंदोलन किया है। कहने को तो ये दो ही मुद्दे हैं, लेकिन इनके पीछे कई देशों के हित जुड़े हैं। दो दिन पहले ही अमेरिका ने बांग्लादेश समेत कई देशों की सहायता बंद की है। इसके कारण बांग्लादेश में बड़े आर्थिक संकट के आसार हैं। आरोप तो यह भी लगते रहे हैं कि बाइडन प्रशासन ने ही बांग्लादेश को इस स्तर पर लाने का काम किया है, लेकिन अब अमेरिका में शासन बदल गया है तो देश की विदेश नीति भी बदल गई है।

भारत और बांग्लादेश के बीच बड़ा कारोबार होता है। दोनों देशों के बीच व्यापार और आर्थिक संबंध लगातार मजबूत हो रहे हैं। साल 2023-24 में भारत और बांग्लादेश के बीच कारोबार 14 अरब डॉलर से ज़्यादा था। भारत से बांग्लादेश को कॉटन और कॉटन वेस्ट का निर्यात किया जाता है। बांग्लादेश से भारत को कपड़े, जूते, बैग, और पर्स जैसे सामान आते हैं। बांग्लादेश के लिए भारत सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार है। भारत पर इस अस्थिरता का असर तो पड़ना तय है, लेकिन जितना नुकसान पड़ोसी को हो रहा है, उसके मुकाबले काफी कम है। एक छोटी सी बात को लेकर बांग्लादेश संकट में फंसा है, उससे भारत को जरूर सबक लेने की जरूरत है। भारत में भी काफी समय से डीप स्टेट एजेंट्स काम कर रहे हैं। मोदी सरकार ने अब तक इनके मंसूबे पूरे नहीं होने दिये और उम्मीद है कि इस प्रकार के लोग भारत में सफल भी नहीं होंगे, फिर भी भारत की सरकार के साथ ही यहां के आम लोगों को भी देश विरोधी ताकतों से सावधान रहने की आवश्यकता है।

श्रीलंका छोटा देश है, बांग्लादेश भी काफी कम क्षेत्र वाला देश है, लेकिन भारत भौगोलिक रूप से और आबादी के हिसाब से बहुत बड़ा देश है। यहां पर हालात बिगड़े तो एशिया समेत पूरे विश्व को अपने शिकंजे में ले लेगा। भारत आज दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला देश ही नहीं है, बल्कि चौथी सबसे बड़ी ताकत भी है। यानी मोटे तौर पर देखें तो दुनिया की करीब 25 फीसदी स्थितियां भारत पर निर्भर करती हैं। काफी हद तक तो ऐसा लगता है कि बीते दस सालों में भारत ने ही पाकिस्तान को कमजोर किया है, लेकिन पाकिस्तान में लोकतंत्र का जीवित रहना भारत के लिए ही सबसे अधिक लाभकारी सौदा है।

श्रीलंका, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार जैसे पड़ोसियों में तख्ता पलट होना एशिया के लिए कतई उचित नहीं है। चीन को छोड़कर भारत अपने पड़ोसी देशों में सबसे बड़ा भाई है। ऐसे में भारत की जिम्मेदार बहुत अधिक बढ़ जाती है। भारत अब तक इस भूमिका को काफी अच्छे से निभा रहा है, उठा रहा है। चीन अपने हित से अधिक कभी सोचता भी नहीं है। चीन में तानाशाही सरकार है, जो मानव हित के बारे में सोचे, ऐसा हो भी नहीं सकता, लेकिन भारत को तो मानवता को सर्वोपरि रखते हुए काम करना होता है। बीते एक दशक में भारत में बहुत कुछ बदला है, तो बदल भी रहा है। मोदी सरकार ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। देश आज दुनिया की लगभग चौथी बड़ी आर्थिक ताकत है और आने वाले दो सालों में तीसरी बड़ी शक्ति बनने जा रहा है। दुनिया की तमाम आर्थिक विश्लेषण करने वाली एजेंसियों ने अमेरिका, चीन के बाद तीसरी बड़ी ताकत माना है।

ऐसे में दुनिया के कई देशों और बड़ी ताकतों की नजर भारत को कमजोर करने की रहती है। बांग्लादेश, अफगानिस्तान, श्रीलंका, म्यांमार समेत कई देशों को डुबो देने वाली ताकतें भारत में भी अस्थिरता फैलाने का प्रयास कर रही हैं, इसलिए भारत सरकार को और भारत के आम जन को भी इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।

–रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

सांवलिया सेठ के एक माह का भंडार एवं भेंट कक्ष का चढ़ावा 23 करोड़ के पार हुआ

भंडार एवं भेंट कक्ष से 133 किलो चांदी व 665 ग्राम 640 मिलीग्राम सोना भी प्राप्त हुआ

मंडफिया, (निसं)। मेवाड़ अंचल के प्रमुख तीर्थ स्थल भगवान श्री सांवलिया जी सेठ मंडफिया के दरबार में गत 28 जनवरी चतुर्दशी को खोले गए भंडार की शेष रही राशि की गिनती पांच चरणों में संपन्न हुई। भंडार की गिनती मंदिर बोर्ड अध्यक्ष भैरुलाल गुर्जर की उपस्थिति में हुई।

मंदिर के प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर ने बताया कि पांचवें चरण में हुई भंडार गिनती में 67 लाख 54 हजार 900 रुपए नगद प्राप्त हुए। इससे पूर्व चार चरणों में हुई गिनती में 16 करोड़ 32 लाख 05 हजार रुपए नगद प्राप्त हुए थे। उन्होंने बताया कि पांचों चरणों की गिनती को मिलाकर कुल 16 करोड़ 99 लाख 59 हजार 900 रुपए की नगद प्राप्त हुए। प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि इसके अलावा भंडार से निकले सोने-चांदी का तोल भी किया गया। भंडार से 497 ग्राम सोना व 52 किलो 997 ग्राम चांदी प्राप्त हुई। उन्होंने बताया कि विभिन्न भक्तों द्वारा मंदिर कार्यालय में 168 ग्राम 640 मिलीग्राम सोना व 80 किलो 657 ग्राम चांदी भेंट स्वरूप जमा हुई। प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि इसके अलावा विभिन्न भक्तों ने विभिन्न स्थानों से मनीऑर्डर भेजकर, ऑनलाइन द्वारा एवं स्वयं उपस्थित होकर मंदिर कार्यालय में 5 करोड़ 92 लाख 53 हजार 417 रुपए भेंट जमा किए। भगवान श्री सांवलिया जी सेठ के एक माह के भंडार एवं भेंट कक्ष कार्यालय से कुल 22 करोड़ 92 लाख 13 हजार 317 रुपए का नगद चढ़ावा मिला।

मंदिर पदाधिकारियों ने मंदिर कर्मचारी एवं बैंककर्मियों की मौजूदगी में सोने-चांदी का तोल किया।

▪ 28 जनवरी चतुर्दशी को खोले गए भंडार की शेष रही राशि की गिनती पांच चरणों में संपन्न हुई

भंडार गिनती में मंदिर बोर्ड सदस्य भैरूलाल सोनी, संजय कुमार मंडोवरा, अशोक शर्मा, ममतेश शर्मा, श्रीलाल पाटीदार, भादसोड़ा सरपंच एवं मंदिर बोर्ड सदस्य शंभूलाल सुथार, मंदिर बोर्ड के पूर्व सदस्य भैरूलाल सोनी, कांग्रेस युवा नेता सुरेश चंद्र गुर्जर, प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर, मंदिर प्रभारी राजेंद्र कुमार शर्मा, लेखाधिकारी राघव शर्मा, सुरक्षा प्रभारी भैरू गिरी गोस्वामी, सहायक सुरक्षा प्रभारी बिहारी लाल गुर्जर, संपदा विभाग के श्रवण शर्मा, राधेश्याम अहीर, संस्थापन प्रभारी लेहरी लाल गाडरी, मनोहर लाल चौबीसा, कालू लाल तेली, दीपक तिवारी सहित मंदिर कर्मचारी एवं बैंककर्मी उपस्थित थे।

सांवलिया सेठ को चांदी का ट्यूबवेल भेंट

मंडफिया, (निसं)। दो भक्तों ने भगवान श्री सांवलिया जी सेठ मंडफिया को चांदी की ट्ययूबवेल भेंट की है। सांवलिया भक्त प्रहलाद सिंह व निलेश सिंह निवासी कटारिया खेड़ा जिला उज्जैन मध्य प्रदेश ने सांवलिया जी मंदिर कार्यालय में 119 ग्राम वजनी चांदी की ट्ययूबवेल भेंट की है। दोनों भक्त का मंदिर प्रभारी राजेंद्र कुमार शर्मा ने स्वागत सम्मान किया।

सीबीएसई 10वीं-12वीं बोर्ड के प्रवेश पत्र जारी

आगामी 15 फरवरी से शुरू होंगी परीक्षाएं

जोधपुर, (कासं)। सीबीएसई ने 10वीं 12वीं की परीक्षाओं के लिए प्रवेश पत्र जारी कर दिए हैं। परीक्षा 15 फरवरी से शुरू होनी है। दोनों परीक्षाओं में इस बार करीब 44 लाख विद्यार्थी शामिल होंगे। सीबीएसई दिल्ली मुख्यालय ने इन दोनों परीक्षाओं को लेकर पहले ही गाइडलाइन जारी कर दी थी। गाइडलाइन प्रवेश पत्रों पर भी दी गई है।

▪ दोनों परीक्षाओं में इस बार करीब 44 लाख विद्यार्थी शामिल होंगे

प्रवेश पत्र स्कूल स्तर पर डाउनलोड होंगे। स्कूल लॉगइन आईडी से प्रवेश पत्र डाउनलोड करके सभी स्कूल अपने अपने विद्यार्थियों को वितरित करेंगे। प्रवेश पत्रों पर प्रिंसिपल के हस्ताक्षर भी होंगे। टाइम टेबल 3 दिसंबर को जारी कर दिया गया था। सभी स्कूलों को सुरक्षा व्यवस्था के लिए निर्देश पूर्व में जारी कर दिए गए थे। इस बार उन्हीं स्कूलों में सेंटर बनाए गए हैं जहां सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था है।

स्कूलों को हाई-रेजोल्यूशन वाले सीसीटीवी कैमरे लगवाने के निर्देश दिए थे। ये कैमरे ऐसे होने चाहिए कि उनमें छात्रों की गतिविधियां और परीक्षा सामग्री साफ-साफ दिखाई दे। स्टाफ, विद्यार्थियों और परीक्षा अधिकारियों से फीडबैक लेने के निर्देश भी सभी प्राचार्यों को दिए गए थे। परीक्षा केंद्र में 10 कमरों या 240 विद्यार्थियों लिए एक व्यक्ति परीक्षा के दौरान निगरानी के लिए नियुक्त किए जाने के भी निर्देश हैं।

राशिफल मंगलवार 4 फरवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलेवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 9:50 तक, शुभ योग रात्रि 12:06 तक, गर करण दिन 3:34 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:50 तक है। राजयोग रात्रि 9:50 से रात्रि 2:31 तक है। भद्रा रात्रि 2:31 से आरम्भ होगी। आज सूर्य सप्तमी, आरोग्य और अचला सप्तमी, मन्वादि है। आज गुरू दिन 3:10 से मार्गी होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:58 से 11:19 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 2:02 तक, शुभ 3:24 से 4:45 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:15, सूर्यास्त 6:07

मेष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिव कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

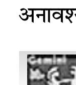

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

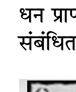

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।

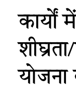

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा।

सिंह

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

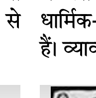

तुला

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

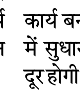

वृश्चिक

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

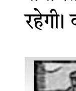

मकर

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

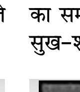

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

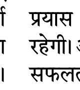

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आज व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है।